International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 14 Issue 01, January 2024,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

डॉ. भीमराव आंबेडकर और दलित सुधार के आन्दोलन

Mahendar Kumar,
Associate Professor, Govt College Bayana

जन्म 14 अप्रैल 1891 को मध्यप्रदे"ा के इन्दौर जिले की सैनिक छावनी मिलिट्री हेडक्वाटर महू मे हुआ था। माता का नाम भीमाबाई , पिता रामजी राव सकपाल जो अग्रेजी फौज में सूबेदार थे। पिता रामजी राव सकपाल महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले के अम्बावडे नामक छोटे से गांव के मूल निवासी थे।

1:– बहिकृत हितकारिणी सभा– 1924 मे यानी इग्लैण्ड से हमे"ाा के लिए लौटने के कुछ ही समय बाद आंबेडकर ने बहिष्कृत हितकारिणी सभा का गठन किया, जिसे डिप्रेस्ड क्लासेज इस्टिटयूट के नाम से भी जाना जाता है बलूत व्यवस्था का कानूनन उन्मूलन भी इसके उद्दे"यों मे से एक था, साथ ही उसने महारो को वतनदार के रूप मे अपने अधिकारो के लिए आवाज उठाने मे भी मदद दी ।

आंबेडकर ने मूक नायक के स्थान पर 1927 मे बहिष्कृत भारत नामक अखबार निकालना शुरू किया । बहिष्कृत भारत के माध्यम से भी वतन व्यवस्था के उन्मूलन का अभियान चलाया गया । 1920 मे बॉम्बे प्रेजिडेसी की लेजिस्लेटिव काउसिल में नियुक्त किए गए पहले अस्पृ"य सदस्य डी. डी. धोलप ने कुछ साल पहले इसी मकसद से काउसिल मे एक विधेयक भी पे"ा किया था। मुख्य रूप से महारो के जीवन से सम्बन्धित वतन व्यवस्था के मामले मे सक्रियता और पदाधिकारियों मे महारो कि संख्या अनुपात से ज्यादा होने के बावजूद बहिष्कृत हितकारणी सभा कोई जातीय संगठन नही थी। जैसा कि इसके नाम से संकेत मिलता है। यह सभी अस्पृष्यो के हितो की रक्षा के लिए बनाई गई संस्था थी।(इसमे चमारो और ढोरो को भी प्रतिनिधित्व मिला हुआ था ।) **f"ाक्षा एका** संगठन इसका ध्येय वाक्य था। यहॉ प्राथमिकताओं का क्रम भी महत्वपूर्ण है क्योकि इसमे f"ाक्षा के माध्यम से समाज सुधारको की आकांक्षाओ का पता चलता है । फुले की सारी चेष्टाओ और अग्रेजो द्वारा खोली गई वि"ोष शालाओ के बावजूद अस्पृ"यो के लिये उपलब्ध f"ाक्षा की हालत बहुत खस्ता थी इसी के चलते सुधारको को अस्पृ"यो की f"ाक्षा पर अपने प्रयास केन्द्रित करने की प्रेरणा मिलती थी इन्ही हालात में f"ान्दे ने बम्बई में अस्पृ"यो के लिए आरक्षित पाठ"ाालाओ का नेटवर्क तैयार किया जिनमें 1916 तक लगभग 500 विधार्थी पढ रहे थे। अपनी विरादरी के लोगो में f"ाक्षा के आभाव से अंबेडकर भी चिन्तित थे लिहाजा बहिष्कृत हितकारिणी सभी के संविधान में f"ाक्षा को समाज सुधारो से भी ऊपर जगह दी गई थी

बहिष्कृत हितकारिणी सभा के उद्दे"यों की औपचारिक सूची निम्न प्रकार थी।

1• छात्रावासो की स्थापना या अन्य अनिवार्य अथवा वांछनीय दिखाई पडने वाले साधनो की मदद से डिप्रेस्ड क्लासेज के बीच f"ाक्षा के प्रसार को बढावा देना।

2• पुस्तकालयो, सामाजिक केन्द्रो और कक्षाओ अथवा अध्ययन चक्रो की स्थापना के माध्यम से डिप्रेस्ड क्लासेज के बीच संस्कृति के प्रसार को प्रोत्साहान देना ।

3• औधोगिक एंव कृषि शालाओं की स्थापना करके डिप्रेस्ड क्लासेज की आर्थिक स्थितियों मे सुधार लाना।

4• डिप्रेस्ड क्लासेज की समस्याओं को प्रतिनिधत्व देना ।

बेहतर f"ाक्षा की चाह के साथ–साथ उस समय अंम्बेडकर की सोच में संस्कृतिकरण के मूल्यो की जडे भी बहुत गहरी थी। इसके अलावा एसोसिए"ान ने जिन सांस्कृतिक मूल्यों को प्रोत्साहान दिया वे दरअसल सवर्णो के ही मूल्य थे । महार हाकी क्लब जिसकी डिप्रेस्ड क्लासेज इंस्टीट्यूट द्वारा स्थापना की गई थी।

के रुप में हमे इन हालात का एक बडा सकते मे डाल देने का उदाहरण दिखाई देता है क्योकि यह क्लब अस्प्र"यो को जुआखोरी, शराबखोरी और दूसरी विकृतियो व मनोरंजन के अस्वारथ्यकर तरीको से दूर रखने के उद्दे"य से शुरु किया गया था ऐसा लगता था मानो अस्पृथ्यो के लिए समानता का मार्ग तभी खुल सकता है जब पहले उन्हे संयम के ब्राहाणवादी गुणो का पाठ अच्छी तरह पढा दिया जाए । डिप्रेस्ड क्लासेज इंस्टिटयूट के संविधान मे यह मत भी व्यक्त किया गया था कि (उच्च वर्गो) के सहयोग और सहानुभूति के बिना डिप्रेस्ड क्लासेज के लिए अपनी मुक्ति का मार्ग ढूँढना सम्भव नही होगा । लिहाजा संगठन ने अस्पृथ्यो को हिन्दू जगत मे समेकित करने के लिए दो मुख्य मांगों पर जोर दिया । उन्हे मन्दिरो में प्रवे"ा और कुओ के प्रयोग की अनुमति दी जाए जिनमें उन्हे अभी तक दूर रखा गया था ।

2• पीपुल्स एज्यूके"ान सोसाइटी की स्थापनाः– डॉ. अम्बेडकर की प्रबल इच्छा थी कि अछूतों की f"ाक्षा के लिए उच्च कोटि का केन्द्र स्थापित हो उनकी यह प्रबल इच्छा उस समय पूरी हुई जब उन्होंने 20 जुलाई, 1946 को पीपुल्स एज्यूके"ान सोसाइटी की स्थापना की। सर्वप्रथम सोसाइटी ने बम्बई में बुद्ध के बचपन के नाम सिद्धार्थ पर एक कॉलेज खोला। सिद्धार्थ कॉलेज शुरू में कियुंज रोड पर कटिया में खोला, बाद में फोर्ट इलाके में दो इमारतें– मेकवा बिल्डिंग और अलबर्ट बिल्डिंग खरीदी गई। पहली का नाम बुद्ध भवन और दूसरी का नाम आनन्द भवन रखा गया। 1951 में सिद्धार्थ कॉलेज इन शानदार इमारतों में लाया गया। इन्ही इमारतों में 1951 से सिद्धार्थ कॉलेज ऑफ आर्टस एण्ड साइन्स, 1953 से सिद्धार्थ कॉलेज ऑफ कॉमर्स

और 1955 से सिद्धार्थ कॉलेज ऑफ लॉ चल रहे हैं। 1972 में सोसाइटी ने बडाला में भी डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर कॉलेज ऑफ कॉमर्स स्थापित किया।

सोसाइटी ने बाबा साहब के नेतृत्व में औरंगाबाद में भी एक ि"ाक्षा केन्द्र स्थापित किया जिसका नाम जगत् प्रसिद्ध बौद्ध भिक्षु नागसेन के नाम पर 'नागसेन वन' रखा गया। महाराष्ट्र प्रान्त का मराठवाडा क्षेत्र निजाम"ाही के दिनों से ि"ाक्षा के लिहाज से बहुत पिछडा हुआ था। बाबा साहब ने निजाम हैदराबाद से नाममात्र की कीमत पर 150 एकड़ से अधिक जमीन खरीद ली। इस जमीन में ज्यादातर कब्रें थी जिन्हें तोडते और गिराते हुए मजदूर भी डरते थे। बाबा साहब 1951 के प"चात प्रायः नागसेन वन में ठहरते। मजदूरों और लोगों का डर दूर करने के लिये वह स्वयं कब्रों को खोदते और एक छोटी सी टोकरी में मुर्दों की हड्डियों को एकत्र करके एक गढ्ढे में डालते जाते। जो लोग मिलने आते उनसे वे पूछते : हाँ कैसे आना हुआ? लोग उत्तर देते बाबा साहब द"ान के लिये। अच्दा द"ान तो हो गये अब मेरे साथ मिलकर काम करो। बाबा साहब उन्हें आदे"ा देते। जो कॉलेज औंरगाबाद में स्थापित किये गए उनका नाम मिलिन्द महाविद्यालय रखा गया। मिलिन्द वह महान् सम्राट थे जिनके भिक्षु नागसेन के साथ प्र"नोत्तर प्रसिद्ध है। इनके सवाल जवाब ' मिलिन्द पन्ना' नामक ग्रन्थ में प्रकाि"ात किये गये हैं। मिलिन्द और नागसेन की ऐतिहासिक जोडी को बाबा ने औरंगाबाद में अमर बना दिया।

सोसाइटी की ओर से उस महाड में एक कॉलेज खोला गया जिसमें स्थित चौदार तालाब में से पानी की बूंद से बंचित रखा गया था। पत्थरों के बदले विद्या कितना बडा और कैसा उत्तम दान है यह, इसी का नाम तो महादान है। सिद्धार्थ कॉलेजों और मिलिन्द महाविद्यालयों ने गरीबों और शोषितों को विद्या तो प्रदान की ही, इन ि"ाक्षा केन्द्रों ने उनमें एक नई जागृति और एक नया उत्साह भी पैदा किया।

3. महाड सम्मेलन 1927– समाज सुधारक से राजनेता बने एस.के.बोले द्वारा 4 अगस्त 1923 को बम्बई की

लेजिस्लेटिव कांउसिल में प्रस्ताव पारित होने के बाद 1927 मे महाड सम्मेलन आयोजित किया गया था । एस.के. बोले द्वारा पे"ा किए गए प्रस्ताव में ये प्रावधान किया गया था कि अस्पृथ्यो को कुओ, धर्म"ालाओ, स्कूलो, न्यायालयो, शासकीय कार्यालयो एवं सरकारी दवाखानों में जाने और उनका प्रयोग करने का अधिकार दिया जाए।

इस प्रस्ताव के पारित होने के बावजूद व्यवहार के धरातल पर अस्पृथ्यों को कोई लाभ नही मिला। लिहाजा तीन साल बाद अगस्त 1926 मे बोले ने एक नया प्रस्ताव पे"ा किया और सरकार से मॉग की कि उन नगरपालिकाओं व स्थानीय निकायों को मिलने वाली सब्सिडी रोक दी जाए

जो उन प्रावधानों को लागू करने को तैयार नही हैं। इस प्रस्ताव के भय से बहुत सारी नगरपालिकाएँ तो रास्ते पर आ गई मगर सवर्णो के विरोध की वजह से उनके आदे"ाो का पालन विरले ही हो पाता था। कोलाबा जिले मे स्थित महाड कस्बा इसका एक अच्छा उदाहरण था जहॉ अस्पृथ्यों को कुछ खास कुओं के इस्तेमाल की बिलकुल छूट नही थी।

मार्च 1927 में यहॉ आंबेडकर ने एक सम्मेलन का आयोजन किया। इस सम्मेलन मे कई गैर–दलित नेताओं का भी समर्थन शामिल था। इन नेताओ में कायस्थ जाति से एस. टिपनीस और मराठा नेता के.एम. जेडे भी शामिल थे। जेडे उस समय पूना में गैर–ब्राहाण आन्दोलन के ि"ाखर पर थे। हाल ही मे आंबेडकर उनकी ओर से एक मुकदमा भी लड चुके थे। महाड सम्मेलन में आंबेडकर ने जो भाषण दिया वह संस्कृतिकरण के सि़द्धन्तों के अनुरूप था कोई स्थायी तरक्की तब तक सम्भव नही है जब तक हम खुद शुद्विकरण की त्रिस्तरीय प्रक्रिया से नही गुजरेगे। हमें अपने आचरण का सामान्य स्वर सुधारना होगा,अपने उच्चारण को साधना होगा और अपने विचारों को पुनर्जीवित करना होगा। लिहाजा इस अवसर पर मैं आपसे यह शपथ लेने की अपील करता हूॅ कि आइन्दा आप मरे हुए जानवरो का मांस नही खाएँगें।

19–20 मार्च 1927 को बहिष्कृत हितकारिणी सभा ने महाड मे कोलाबा जिला बहिष्कृत सम्मेलन का आयोजन किया। सम्मेलन के दूसरे दिन अनंतराव चित्रे ने अचानक एक प्रस्ताव रखते हुए कहा कि सब लोग पानी के टैंक की ओर चले और पानी पीएं। उन्होने कहा मैने पहले ही तय कर लिया था और मौके पर बम का गोला फेंक दिया। पन्द्रह सौ उत्साही लोगो का सैलाब एकाएक टैंक की ओर बढ चला और पानी पीने लगा। शहर मे खबर फैलते ही अन्य हिन्दू जातियों के क्रुद्ध लोग इकटठा होने लगे। उन्हे भय था कि अब दूसरा आक्रमण मंदिरो पर होगा। इसी के चलते उन लोगो ने अछूतो की पिटाई शुरू कर दी। बाद मे ब्राहाणो ने टैंको के शुद्धीकरण की रस्म अदा की।

दिसम्बर 1927 को दूसरे महाड सम्मेलन में डॉ. आंबेडकर ने जो भाषण दिया उसमे उन्होने जाति व्यवस्था के समूल ना"ा का आह्यन किया। उन्होने फ्रांसीसी क्रांति के मूल्यो का हवाला दिया और महाड सम्मेलन की तुलना वर्साप मे आयोजित एस्टेट्स जेनरल से भी की जहॉ पहली बार थर्ड एस्टेट के लोगो ने एक सामूहिक और औपचारिक पद्धति से अपने विद्रोह का ऐलान किया था।

सबसे पहले मैं हमारा विरोध कर रहे लोगो को बता देना चाहता हूॅ कि इस चवदार तालाब का पानी न पीने से हम मर जाने वाले जाने वाले नही है। औरो की तरह हम भी मनुष्य हैं हम तो बस यह साबित करने के लिए तालाब तक जाना चाहते हैं(.....)। यह सम्मेलन इस भूमि पर

समानता के युग का सूत्रपात करने के लिए बुलाया गया है। अस्पृथ्यता के उन्मूलन और अर्न्तजातीय भोज से ही हमारी सारी समस्याएँ खत्म नही होंगी। न्यायालय, सेना पुलिस और वाणिज्य जैसे तमाम सरकारी महकमों को हमारे लिए खोला जाना चाहिए(.....)। हमें हिन्दू समाज को जातिवाद के उन्मूलन और समानता के दो सिद्धातों पर फिर से खडा करना होगा। इस भाषण के बाद मानवाधिकारों के पक्ष मे दिए गए वक्तव्य और मनुष्यो की अविभाज्य समानता के प्रस्ताव पर लोगों ने हाथ उठाकर अपना समर्थन दिया। इसके बाद दो और प्रस्ताव पे"ा किए गए। पहले प्रस्ताव में हिन्दू समाज के भीतर मौजूद आन्तरिक विभाजनो को खत्म करने का आह्मान किया गया ताकि अन्ततः इसमें सिर्फ एक श्रेणी के लोग रह जाएँ। दूसरे प्रस्ताव में ये अपील की गई कि सभी को पुजारी का व्यवसाय अपनाने का अधिकार दिया जाए।

कई वक्ताओ ने मनु के कानूनों यानी मनुस्मृति की निन्दा भी की। मंच के सामने ही एक चबूतरे पर मनुस्मृति की एक प्रति भी रखी गई थी जिसे बाद मे एक दलित संन्यासी ने जलाया था। अगले दिन आंबेडकर ने चवदार तालाब तक निबार्धि पहुँच का अधिकार हासिल करने के लिए एक सत्याग्रह शुरू किया जिसमें लगभग 4000 लोगों ने हिस्सा लिया। जिला मजिस्ट्रेट ने सत्याग्रहियों से आह्यन किया कि वे शांति बनाए रखें क्योकि सवर्ण हिन्दू इस मामले पर यह दावा करते हुए अदालत मे वाद दायर कर चुके है कि यह निजी सम्पति का मामला हैः लिहाजा इस मामले मे अदालत के फैसले का इन्तजार करना बेहतर होगा। मजिस्ट्रेट के इस आग्रह पर आंबेडकर ने सत्याग्रह स्थगित कर दिया और तालाब के चारो तरफ एक जुलूस निकाला उनके तरीकों में यह लचीलापन बार–बार दिखाई दिया। विवादों को हाथोहाथ हल करने की बजाय मामले को न्यायालय के विचाराधीन छोड देने मे भी उन्हे कोई ऐतराज नही होता था। इस बदलाव में आंबेडकर की वैधानिकता यहाँ तक कि संवैधानिकता मे आंबेडकर की आस्था का संकेत मिलता है। इस खास मामले में अदालतो ने 1937 में उनके फैसले को जायज ठहराया था।

4. अम्बेडकर द्वारा धार्मिक सुधार– 1920 मे शुरू किए गए उनके अखवार मूक नायक के शीर्षक के नीचे तुकाराम के एक दोहे को जगह दी गई जिसमें कहा गया था कि किस तरह बेआवाज 'सरल' लोगो को ही अवमानना का दोषी ठहरा दिया जाता है। मगर आंबेडकर ने साधु–संन्यासियों की पूजा से उनके अनुयायियों पर पड रहे हानिकारक प्रभावों पर नि"चय ही बहुत तेजी से कार्यवाई की। प्रमुख त्यौहारों के दौरान वह तीर्थ स्थानों पर जाते और अस्पृथ्यों से मिलकर उन्हे हिन्दुओ के साथ सहयोग न करने के लिए प्रेरित करते। यहाँ तक कि उन्होने विठोबा मंदिर मे चोखोबा की पूजा के लिए पढंरपुर जाने की अपनी पत्नी की इच्छा को भी

ठुकरा दिया था क्योकि वह जानते थे कि उन्हे मन्दिर में प्रवे"ा ही नही करने दिया जाएगा। उन्होने अपनी पत्नी से कहा एक सद् जीवन निःस्वार्थ सेवा और उत्पीडितों के हित मे निष्कपट बलिदान के रास्ते पर चलकर हमें एक और पंढरपुर बनाना होगा।

धीरे–धीरे आंबेडकर ऐसे अस्पृथ्यों पर और तेज हमले करने लगे जो अभी भी तीर्थ यात्राओं पर जाते थे। खंडोवा के बडे त्योहार के दौरान उन्होने एलान किया हमारी कितनी पीढियों ने भगवान की ड्योढी पर माथा रंगड–रगडकर खुद को खत्म कर लिया हैं। कभी भगवान को तुम पर दया आई उसने तम्हारे लिए कौन सा बडा काम कर दिया। पीढी दर पीढी तुम गाँव का कचरा साफ करते रहे और भगवान तुम्हें खाने के लिए मरे हुए जानवर देता रहा फिर भी भगवान ने तुम पर कोई दया नही दिखाई।तुम असल मे किसी भागवान की पूजा नही करते तुम अपनी अज्ञानता की उपासना कर रहे हो।

इस प्रकार आंबेडकर ने तमाम तरह के धार्मिक व्यवहारों को खारिज करके हिन्दू धर्म के साथ अपने विच्छेद को एक पूर्णता दे दी थी। जनवरी 1928 मे उन्हे नासिक के निकट त्रियम्बक में डिप्रेस्ड क्लासेज की मीटिंग की अध्यक्षता के लिए आमंत्रित किया गया था जहाँ पन्द्रहवी शताब्दी के महान दलित सन्त चोखामेला के मन्दिर के निर्माण पर चर्चा होने वाली थी। आंबेडकर ने इस प्रस्ताव का उग्र विरोध किया। उनका कहना था कि साधु–सन्त और उनकी आधुनिक विरासत एक ब्राह्मण और एक शूद्र के बीच केवल आध्यात्मिक आचरण के स्तर पर ही समानता को बढावा दे सकती है यह विरासत एक ब्राह्मण और एक शूद को एक दूसरे के बराबर नही ला सकती जाति के उन्मूलन की द्रष्टि से देखें तो (.....) सन्तों के संघर्ष से समाज पर कोई प्रभाव नही पडा है। मनुष्य का मूल्य स्वयं सिद्ध है, स्वतः स्पष्ट हैः यह मूल्य उसे भक्ति के मार्ग चलकर नही मिलता है। सन्तो ने इस बिन्दु को सिद्ध करने के लिए संघर्ष नही किया। इसकी बजाय उनके संघर्ष से डिप्रेस्ड क्लासेज पर बहुत अहितकारी प्रभाव पडा है। इससे ब्राह्माणो को यह कहकर डिप्रेस्ड क्लासेज को चुप कराने का एक बहाना मिल गया है कि उन्हे तभी सम्मान मिलेगा कि जब वे भी चोखामेला जैसा ऊँचा स्थान प्राप्त कर लेगे। इस प्रकार आंबेडकर ने धार्मिक लोगो द्वारा समानता के आन्दोलन को भटकाने के लिए अपनाए जा रहे हथकंडो को तार–तार करके रख दिया। उन्होने ऐसी समानता को स्वीकार नही किया जो केवल आध्यात्मिक धरातल तक ही सीमित हो। इसकी बजाय उन्होने सामाजिक समानता पर जोर दिया। मन्दिरों मे प्रवे"ा के सवाल पर भी वह यही तक लेकर चलते थे। मूक नायक के पहले सम्पादकीय में आंबेडकर दो सम्भावनाओं के बीच झूल रहे है। वह इस दुविधा से जूझ रहे है कि एक अस्पृ"य के पास खुद अपने मन्दिर होने चाहिए या उसे हिन्दओं के मन्दिर मे प्रवे"ा के लिए दबाव बनाना

चाहिए। बीस के द"ाक के मध्य तक वह अभी भी अस्पृथ्यो के लिए मन्दिरो के द्वार खोलने पर जोर दे रहे थे। 1924 के वायकम आन्दोलन में उनकी रुचि का कारण भी यही था। त्रावणकोर राज्य (मौजूदा केरल राज्य) में स्थित वायकम शहर के ब्राह्मणो ने मन्दिर मे प्रवे"ा और उसके सामने से गुजरने वाली सडक से डिप्रेस्ड क्लासेज के लोगो के गुजरने पर पाबन्दी लगाई हुई थी। इसी के विरुद्ध स्थानीय लोगो द्वारा एक सत्याग्रह आन्दोलन शुरु किया गया था। यह टकराव उस समय सुर्खियो मे आ गया जब गांधी ने वायकम का दौरा करने के बाद सत्याग्रहियों का पक्ष लिया था। 1925 में जब टकराव चल रहा था उसी समय आंबेडकर ने ऐलान किया कि: आज दे"ा भर में हमारे लिए वायकम में चल रहा सत्याग्रह ही सबसे महत्वपूर्ण घटना है। आन्दोलन के फलस्वरुप आखिरकार अस्पृथ्यो के लिए सडक खोल दी गई मगर मन्दिर मे प्रवे"ा का सवाल 1936 तक हल नही हुआ। फिर भी 1936 मे भी अस्पृथ्यों को इस मन्दिर में प्रवे"ा का अधिकार मिलना दे"ा के शेष भागो के मुकाबले काफी बडी घटना थी। इस बीच महारो ने एक मन्दिर मे प्रवे"ा का अपना पहला आन्दोलन शुरु किया। जी.ए. गवई के नेतृत्व मे यह आन्दोलन 1927 में अमरावती में शुरु किया गया। आबेडकर ने इस आनदोलन को समर्थन तो दिया मगर अपने भाई के देहान्त के कारण खुद इसमें शामिल नही हो पाए। यह आन्दोलन जल्दी ही मन्द पड गया। 1929 में पूना के पार्वती मन्दिर मे प्रवे"ा के सवाल पर हुआ सत्याग्रह एक बिलकुल अलग स्तर का आन्दोलन था। ि"ावराम जानबा कांबले ने इस कार्यवाई का नेतृत्व किया जिसमें बाह्मण सुधारको ने भी हिस्सा लिया। यहाँ आंबेडकर की भूमिका अमरावती से भी ज्यादा सीमित रही। इस आन्दोलन की गति भी जल्दी ही क्षीण पड गई और और अस्पृथ्यों को इस मन्दिर मे प्रवे"ा का अधिकार 1947 तक नही मिला।

5. कालाराम मन्दिर प्रवे"ा 1930 :—डॉ. भीमराव आंबेडकर नासिक के काला राम मन्दिर मे प्रवे"ा को अपना कोई लक्ष्य नही बल्की यह समाज परिर्वतन के एक साधन के रूप में देखते थे इस अवसर पर दिए गए उनके पहले भाषण से इस बात की पुष्टि होती है:

तुम्हारी समस्याएँ(केवल) मन्दिर में प्रवे"ा से हल होने वाली नही है। राजनीति अर्थ"ाास्त्र ि"ाक्षा, धर्म—ये सभी इस समस्या के हिस्से है। आज का सत्याग्रह हिन्दू मस्तिष्क के लिए एक चुनौती है। हिन्दू हमें मनुष्य मानने को तैयार हैं या नही ! यह हमें आज पता चल जाएगाँ। ..... हम जानते है कि मन्दिर का भगवान पत्थर का है। उसके द"ान और पूजा से हमारी समस्याएँ हल नही होंगी। फिर भी हम आगे जरुर बढेगे और हिन्दूओं के दिमागों को बदलने की कोि"ा"ा करेगे।

आन्दोलनकारियों और सवर्णो के बीच हिंसा की छिटपुट वारदातें हुई। थोडे दिनो बाद सवर्णो ने कुछ महारों को मन्दिर पर होने वाले वार्षिक उत्सव के दौरान रथ खीचने से रोक दिया। यह हाल ही में हुए एक समझौते का उल्लघंन था। इस घटना से आंबेडकर की प्रतिबद्धता को बल मिला मगर अन्ततः उन्होने 1934 में इस आन्दोलन से खुद को दूर कर लिया। उन्हे डर था कि कही उनके समर्थक इस तरह के साधारण महत्व वाले धार्मिक मुद्दे को जरुरत से ज्यादा महत्व न देने लग जाएँः

मैने मन्दिर प्रवे"ा आन्दोलन यह सोचकर शुरु नही किया था कि मैं डिप्रेस्ड क्लासेज को उन मूर्तियो का उपासक बनाना चाहता हूँ जिनकी उपासना से उन्हे वंचित रखा गया है। मैं यह मानता हूँ कि मन्दिर मे प्रवे"ा से डिप्रेस्ड क्लासेज के लोग हिन्दू समाज के समान और अभिन्न सदस्य बन जाएँगे। जहाँ तक इस पहलू का सवाल है तो मैं डिप्रेस्ड क्लासेज को यही सलाह दूँगा कि वे हिन्दू समाज का अभिन्न अंग बनने पर सहमति देने से पहले हिन्दू समाज और हिन्दू धर्म"ाास्त्र के आमूल पुनर्गठन पर जोर दें। मैने मन्दिर प्रवे"ा सत्याग्रह केवल इसलिए शुरु किया क्योकि मुझे ऐसा लगता था कि यह डिप्रेस्ड क्लास में ऊर्जा भरने और उन्हे अपने हालात के प्रति सचेत बनाने का यही सबसे अच्छा तरीका है। मेरा मानना है कि मैने यह लक्ष्य हासिल कर लिया है लिहाजा मन्दिर प्रवे"ा के सवाल का अब मेरे लिए कोई उपयोग नही है।

मैं चाहता हूँ कि डिप्रेस्ड क्लास अपनी ऊर्जा और संसाधन राजनीति और ि"ाक्षा पर केन्द्रित करें और मैं आ"ाा करता हूँ कि वे इन दोनो का महत्व समझेगे। भले ही यह अस्पृथ्यों को गोलबन्द करने का एक उचित साधन रहा हो मगर आंबेडकर के लिए मन्दिरों में प्रवे"ा का दावा असल में यह माँग करने का एक तरीका भर था कि उन्हें भी उस हिन्दू धर्म मे जगह दी जाए जिसकी जाति व्यवस्था ने उन्हे अधीनस्थ हैसियत मे कैद किया हुआ है। अन्ततः आंबेडकर ने मन्दिर में प्रवे"ा के मुददे सहित इस सामाजिक व्यवस्था को पूरी तरह खारिज कर दिया। निसन्देह आंबेडकर यह देखकर भी हता"ा हुए थे कि असेम्बलियों मे बैठे सवर्ण प्रतिनिधि मन्दिरों में असपृथ्यों के प्रवे"ा को कानूनी मान्यता देने वाले कानून पारित करने के लिए तैयार नही थे। गौरतलब है कि 1934 में दिल्ली स्थित सेंट्रल असेम्बली के ज्यादातर सदस्यो ने रंगा अय्यर द्वारा पे"ा किए गए मन्दिर प्रवे"ा विधेयक को नामंजूर कर दिया था। एक समाज"ाास्त्री के तौर पर आंबेडकर ने जाति व्यवस्था का गहन विष्लेषण किया ताकि वह उसके खिलाफ ज्यादा अच्छी तरह संघर्ष कर सके।

डॉ. भीमराव आंबेडकर ने निष्कर्ष उन्होने अपना पूरा जीवन भारतीय समाज की जातीय व्यवस्था और हिन्दू धर्म की कुरीतियों के खिलाफ संघर्ष करते हुए बिता दिया इतना ही नही उनका

जीवन खास तोर पर दलितो और पिछडों को उनके अधिकार दिलाने के लिए संघर्ष"ील रहा। उन्होने हमे"ाा महिलाओं को ि"ाक्षा देने पर जोर दिया। बाबा साहब आंबेडकर के प्रयासों और संघर्षमय जीवन के लिए उन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थः

1. बाबा साहेब डॉ. आंबेडकर एक परिचय
2. डॉ. आंबेडकर कुछ अनछुए प्रसंग लेखक नानक चन्दरतू सम्यक प्रका"ान पि"चमपुरी नई दिल्ली
3. डॉ. भीमराव आंबेडकर विचार और वि"लेषण लेखक प्रो. (डॉ) बाबू लाल मीना , डॉ आ"ाा सिंह रावत ि"ावालिक प्रका"ान नई दिल्ली
4. अंबेडकर प्रबुद्ध भारत की ओर गेल ओमवेर अनुवाद डॉ पूरन चन्द टंडन पेगुइन बुक्स पेंगुइन रेडम हाउस इम्प्रिंट
5. डी. रामराव (महुली के उपनिरीक्ष पुलिस आयुक्त बॉम्बे दिसम्बर 192)
6. बॉम्बे क्रॉनिकल 26 अप्रैल 1926 वही पृ. 8
7. जे. गोखले रियायतों से टकराव तक उद्धृत पृ. 84
8. डी कीर, डॉ अम्बेडकर ऑप सिट पी. 62
9. सोर्स मेटेरियल ओपी. सिट पी. पी. 6–7 आंबेडकर मे तीस के द"ाक के मध्य
10. ए. जैलियर डी. आर अम्बेडकर ओपी. सिंह पी. 122 में
11. दलित वर्ग संस्थान की ओर से अपील (1931) प्राइवेट
12. 5 कीट डी आर अम्बेडकर ओपी सिह पी.52
13. दामोदर रुजाजी जाधव (न. जाधव इनटचेनल ओपी सिंर पी 43) की गवाही
14. बी. काबले , नोट्रे इक्सिस्टेंस इविद पी. 242
15. हिन्दू नारी का उत्थान और पतन डॉ.बी.आर.अंम्बेडकर
16. डी.आर. जाटव डॉ. अम्बेड़कर व्यक्तित्व एवं कृतित्व